



Mrs samriddhi

23 Oct 1995

03:49 PM

Sikar

Model: All-Dosha-Report

Order No: 119487501

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 23/10/1995
दिन _____: सोमवार
जन्म समय _____: 15:49:00 घंटे
इष्ट _____: 23:07:47 घटी
स्थान _____: Sikar
राज्य _____: Rajasthan
देश _____: India

अक्षांश _____: 27:51:00 उत्तर
रेखांश _____: 75:14:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:29:04 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 15:19:56 घंटे
वेलान्तर _____: 00:15:36 घंटे
साम्पातिक काल _____: 17:25:24 घंटे
सूर्योदय _____: 06:33:53 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:52:52 घंटे
दिनमान _____: 11:18:59 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 05:44:05 तुला
लग्न के अंश _____: 24:01:19 कुम्भ

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कुम्भ - शनि
राशि-स्वामी _____: कन्या - बुध
नक्षत्र-चरण _____: चित्रा - 1
नक्षत्र स्वामी _____: मंगल
योग _____: विष्कुम्भ
करण _____: चतुष्पाद
गण _____: राक्षस
योनि _____: व्याघ्र
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मूषक
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: पे-पैनी
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1917	कार्तिक	1
पंजाबी	संवत : 2052	कार्तिक	7
बंगाली	सन् : 1402	कार्तिक	6
तमिल	संवत : 2052	आइपसी	6
केरल	कोल्लम : 1171	तुलम	6
नेपाली	संवत : 2052	कार्तिक	7
चैत्रादि	संवत : 2052	कार्तिक	कृष्ण 14
कार्तिकादि	संवत : 2052	आश्विन	कृष्ण 14

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 14
 तिथि समाप्ति काल _____ : 12:07:33
 जन्म तिथि _____ : 15
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : हस्त
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 11:41:57 घंटे
 जन्म योग _____ : चित्रा
 सूर्योदय कालीन योग _____ : वैधृति
 योग समाप्ति काल _____ : 13:28:07 घंटे
 जन्म योग _____ : विष्कुम्भ
 सूर्योदय कालीन करण _____ : शकुनि
 करण समाप्ति काल _____ : 12:07:33 घंटे
 जन्म करण _____ : चतुष्पाद
 भयात _____ : 10:17:39
 भभोग _____ : 56:44:25
 भोग्य दशा काल _____ : मंगल 5 वर्ष 8 मा 27 दि

घात चक्र

मास _____ : भाद्रपद
 तिथि _____ : 5-10-15
 दिन _____ : शनिवार
 नक्षत्र _____ : श्रवण
 योग _____ : शुक्ल
 करण _____ : कौलव
 प्रहर _____ : 1
 वर्ग _____ : मार्जार
 लग्न _____ : मीन
 सूर्य _____ : मेष
 चन्द्र _____ : वृश्चिक
 मंगल _____ : वृष
 बुध _____ : मीन
 गुरु _____ : मिथुन
 शुक्र _____ : कर्क
 शनि _____ : मीन
 राहु _____ : सिंह

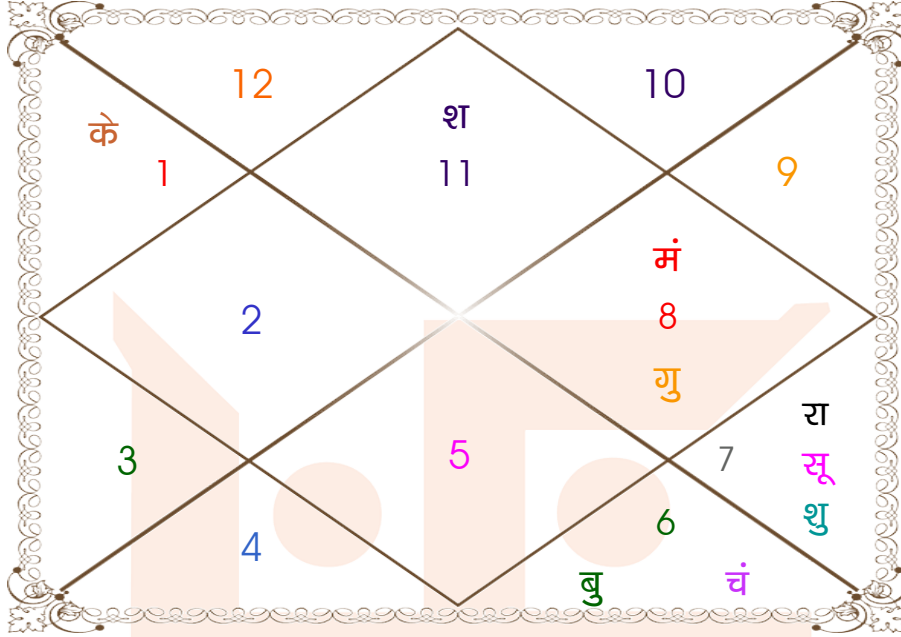


FUTUREPOINT
 Astro Solutions

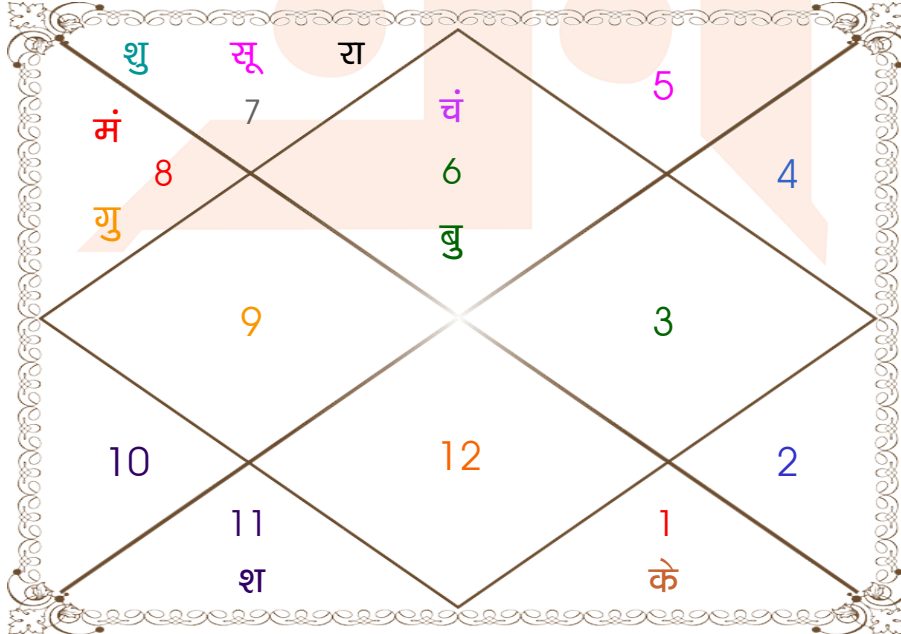


जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

	के		
श ल			
	गु मं	रा सू शु	बु चं

लग्न कुण्डली

	के	श ल
	शु सू रा	मं गु
चं बु		

विंशोत्तरी
मंगल 5वर्ष 8मा 27दि
मंगल

23/10/1995

21/07/2114

मंगल	20/07/2001
राहु	21/07/2019
गुरु	21/07/2035
शनि	20/07/2054
बुध	21/07/2071
केतु	20/07/2078
शुक्र	20/07/2098
सूर्य	21/07/2104
चन्द्र	21/07/2114

योगिनी
मंगला 0वर्ष 9मा 25दि
संकटा

18/08/2023

18/08/2031

संकटा	29/05/2025
मंगला	18/08/2025
पिंगला	27/01/2026
धान्या	28/09/2026
भ्रामरी	18/08/2027
भद्रिका	27/09/2028
उल्का	27/01/2030
सिद्धा	18/08/2031



FUTUREPOINT
Astro Solutions



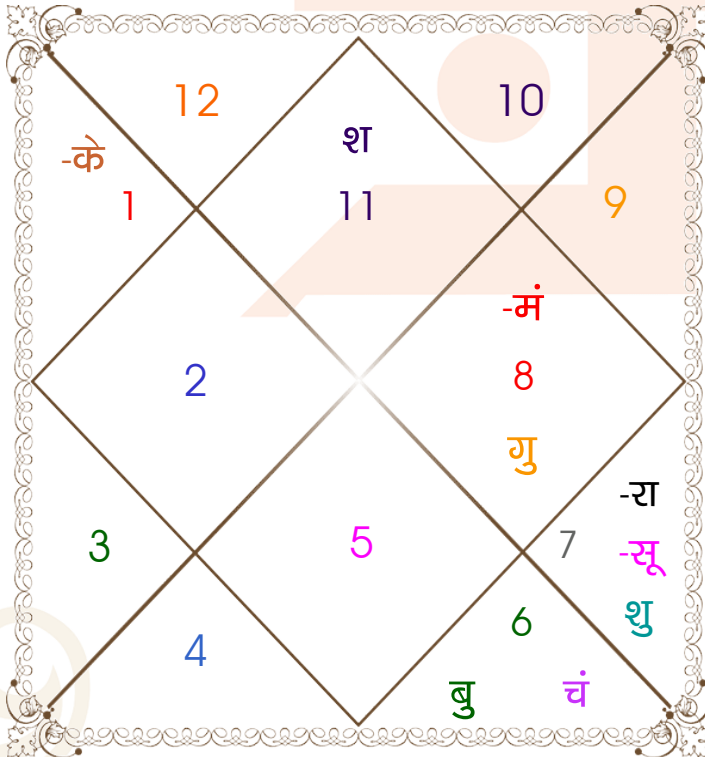
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कुंभ	24:01:19	504:17:52	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	---
सूर्य			तुला	05:44:05	00:59:45	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	चंद्र	नीच राशि
चंद्र			कन्या	25:43:54	14:00:25	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	मित्र राशि
मंगल			वृश्चि	08:01:45	00:43:05	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	केतु	स्वराशि
बुध			कन्या	18:00:58	01:16:22	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	मूलत्रिकोण
गुरु			वृश्चि	20:32:23	00:11:25	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	मित्र राशि
शुक्र			तुला	22:30:36	01:14:41	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	स्वराशि
शनि	व		कुंभ	24:55:52	00:02:53	पू०भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	स्वराशि
राहु			तुला	02:43:33	00:00:03	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	मित्र राशि
केतु			मेष	02:43:33	00:00:03	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	मित्र राशि
हर्ष			मक	02:50:49	00:00:52	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	गुरु	---
नेप			धनु	29:04:01	00:00:37	उत्तराषाढ़ा	1	21	गुरु	सूर्य	मंगल	---
प्लूटो			वृश्चि	05:30:34	00:02:08	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	बुध	---
दशम भाव			वृश्चि	28:15:19	--	ज्येष्ठा	--	18	मंगल	बुध	शनि	--

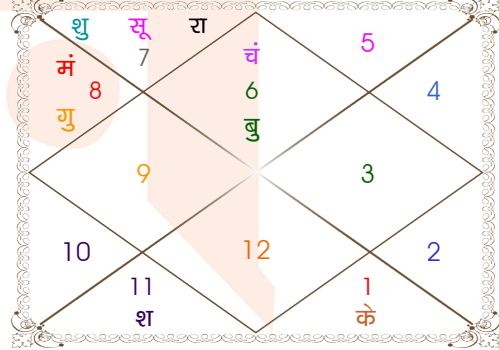
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:48:01

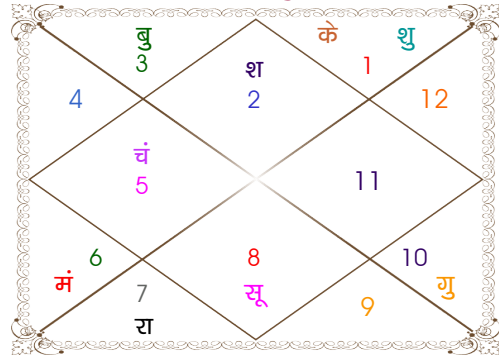
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कुम्भ 09:43:39	कुम्भ 24:01:19
2	मीन 09:43:39	मीन 25:25:59
3	मेष 11:08:19	मेष 26:50:39
4	वृष 12:32:59	वृष 28:15:19
5	मिथुन 12:32:59	मिथुन 26:50:39
6	कर्क 11:08:19	कर्क 25:25:59
7	सिंह 09:43:39	सिंह 24:01:19
8	कन्या 09:43:39	कन्या 25:25:59
9	तुला 11:08:19	तुला 26:50:39
10	वृश्चिक 12:32:59	वृश्चिक 28:15:19
11	धनु 12:32:59	धनु 26:50:39
12	मकर 11:08:19	मकर 25:25:59

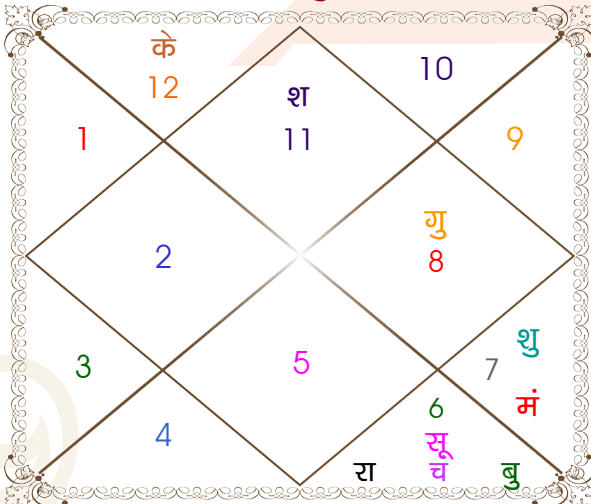
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कुम्भ 24:01:19	
2	मेष 03:12:36	
3	वृष 03:26:20	
4	वृष 28:15:19	
5	मिथुन 21:59:40	
6	कर्क 18:53:12	
7	सिंह 24:01:19	
8	तुला 03:12:36	
9	वृश्चिक 03:26:20	
10	वृश्चिक 28:15:19	
11	धनु 21:59:40	
12	मकर 18:53:12	

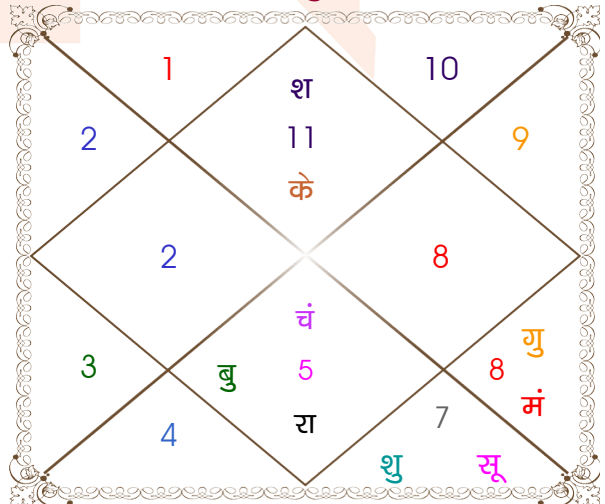
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



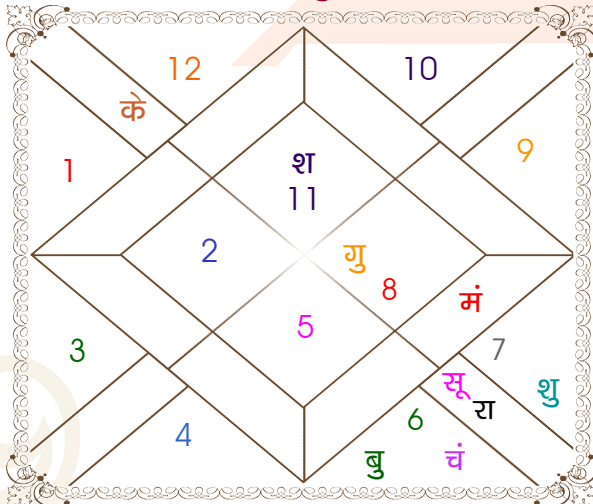
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----					
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	कलत्र	पितृ	बाल	भीत	प्रकाश	0.09	35 %
चंद्र	आत्मा	मातृ	बाल	मुदित	आगम	1.86	80 %
मंगल	ज्ञाति	भातृ	वृद्ध	स्वस्थ	भोजन	4.17	35 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	कुमार	स्वस्थ	निद्रा	9.83	57 %
गुरु	मातृ	धन	कुमार	मुदित	आगमन	1.73	49 %
शुक्र	भातृ	कलत्र	वृद्ध	स्वस्थ	निद्रा	1.70	19 %
शनि	अमात्य	आयु	मृत	स्वस्थ	आगम	2.29	68 %
राहु	---	ज्ञान	बाल	मुदित	प्रकाश	0.00	53 %
केतु	---	मोक्ष	बाल	मुदित	भोजन	0.00	53 %
कुल						21.68	

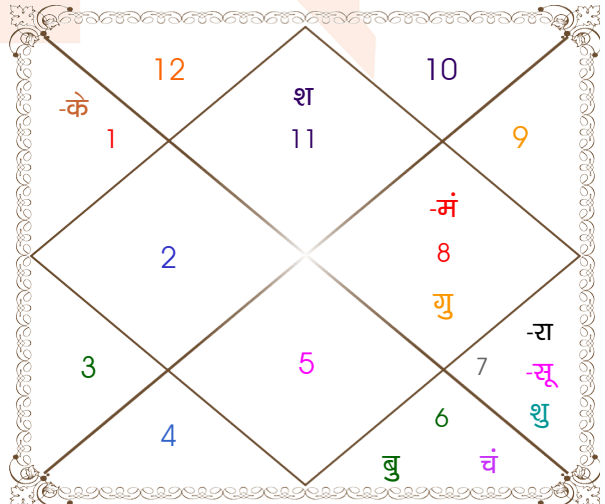
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

चलित कुंडली



लग्न-चलित



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 5 वर्ष 8 मास 27 दिन

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
23/10/1995	20/07/2001	21/07/2019	21/07/2035	20/07/2054
20/07/2001	21/07/2019	21/07/2035	20/07/2054	21/07/2071
23/10/1995	राहु 01/04/2004	गुरु 07/09/2021	शनि 23/07/2038	बुध 16/12/2056
राहु 04/01/1996	गुरु 26/08/2006	शनि 20/03/2024	बुध 01/04/2041	केतु 13/12/2057
गुरु 10/12/1996	शनि 02/07/2009	बुध 26/06/2026	केतु 11/05/2042	शुक्र 13/10/2060
शनि 19/01/1998	बुध 19/01/2012	केतु 02/06/2027	शुक्र 11/07/2045	सूर्य 19/08/2061
बुध 16/01/1999	केतु 06/02/2013	शुक्र 31/01/2030	सूर्य 23/06/2046	चंद्र 19/01/2063
केतु 14/06/1999	शुक्र 06/02/2016	सूर्य 19/11/2030	चंद्र 22/01/2048	मंगल 16/01/2064
शुक्र 13/08/2000	सूर्य 31/12/2016	चंद्र 20/03/2032	मंगल 02/03/2049	राहु 05/08/2066
सूर्य 19/12/2000	चंद्र 02/07/2018	मंगल 24/02/2033	राहु 07/01/2052	गुरु 09/11/2068
चंद्र 20/07/2001	मंगल 21/07/2019	राहु 21/07/2035	गुरु 20/07/2054	शनि 21/07/2071

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
21/07/2071	20/07/2078	20/07/2098	21/07/2104	21/07/2114
20/07/2078	20/07/2098	21/07/2104	21/07/2114	00/00/0000
केतु 17/12/2071	शुक्र 19/11/2081	सूर्य 07/11/2098	चंद्र 21/05/2105	मंगल 17/12/2114
शुक्र 15/02/2073	सूर्य 19/11/2082	चंद्र 08/05/2099	मंगल 20/12/2105	राहु 24/10/2115
सूर्य 23/06/2073	चंद्र 20/07/2084	मंगल 13/09/2099	राहु 21/06/2107	00/00/0000
चंद्र 22/01/2074	मंगल 19/09/2085	राहु 08/08/2100	गुरु 20/10/2108	00/00/0000
मंगल 20/06/2074	राहु 19/09/2088	गुरु 27/05/2101	शनि 21/05/2110	00/00/0000
राहु 08/07/2075	गुरु 21/05/2091	शनि 09/05/2102	बुध 21/10/2111	00/00/0000
गुरु 13/06/2076	शनि 20/07/2094	बुध 16/03/2103	केतु 21/05/2112	00/00/0000
शनि 23/07/2077	बुध 20/05/2097	केतु 22/07/2103	शुक्र 20/01/2114	00/00/0000
बुध 20/07/2078	केतु 20/07/2098	शुक्र 21/07/2104	सूर्य 21/07/2114	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 5 वर्ष 8 मा 23 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - बुध 20/03/2024 26/06/2026	गुरु - केतु 26/06/2026 02/06/2027	गुरु - शुक्र 02/06/2027 31/01/2030	गुरु - सूर्य 31/01/2030 19/11/2030	गुरु - चंद्र 19/11/2030 20/03/2032
बुध 15/07/2024 केतु 02/09/2024 शुक्र 18/01/2025 सूर्य 28/02/2025 चंद्र 08/05/2025 मंगल 25/06/2025 राहु 27/10/2025 गुरु 15/02/2026 शनि 26/06/2026	केतु 16/07/2026 शुक्र 11/09/2026 सूर्य 28/09/2026 चंद्र 26/10/2026 मंगल 15/11/2026 राहु 05/01/2027 गुरु 20/02/2027 शनि 15/04/2027 बुध 02/06/2027	शुक्र 11/11/2027 सूर्य 30/12/2027 चंद्र 20/03/2028 मंगल 16/05/2028 राहु 09/10/2028 गुरु 16/02/2029 शनि 20/07/2029 बुध 05/12/2029 केतु 31/01/2030	सूर्य 14/02/2030 चंद्र 11/03/2030 मंगल 28/03/2030 राहु 11/05/2030 गुरु 19/06/2030 शनि 04/08/2030 बुध 14/09/2030 केतु 01/10/2030 शुक्र 19/11/2030	चंद्र 30/12/2030 मंगल 27/01/2031 राहु 10/04/2031 गुरु 14/06/2031 शनि 30/08/2031 बुध 07/11/2031 केतु 06/12/2031 शुक्र 25/02/2032 सूर्य 20/03/2032
गुरु - मंगल 20/03/2032 24/02/2033	गुरु - राहु 24/02/2033 21/07/2035	शनि - शनि 21/07/2035 23/07/2038	शनि - बुध 23/07/2038 01/04/2041	शनि - केतु 01/04/2041 11/05/2042
मंगल 09/04/2032 राहु 30/05/2032 गुरु 15/07/2032 शनि 06/09/2032 बुध 25/10/2032 केतु 14/11/2032 शुक्र 09/01/2033 सूर्य 27/01/2033 चंद्र 24/02/2033	राहु 05/07/2033 गुरु 30/10/2033 शनि 18/03/2034 बुध 20/07/2034 केतु 09/09/2034 शुक्र 03/02/2035 सूर्य 18/03/2035 चंद्र 30/05/2035 मंगल 21/07/2035	शनि 11/01/2036 बुध 14/06/2036 केतु 17/08/2036 शुक्र 16/02/2037 सूर्य 12/04/2037 चंद्र 13/07/2037 मंगल 15/09/2037 राहु 27/02/2038 गुरु 23/07/2038	बुध 10/12/2038 केतु 05/02/2039 शुक्र 19/07/2039 सूर्य 06/09/2039 चंद्र 27/11/2039 मंगल 23/01/2040 राहु 19/06/2040 गुरु 28/10/2040 शनि 01/04/2041	केतु 25/04/2041 शुक्र 02/07/2041 सूर्य 22/07/2041 चंद्र 25/08/2041 मंगल 17/09/2041 राहु 17/11/2041 गुरु 10/01/2042 शनि 15/03/2042 बुध 11/05/2042
शनि - शुक्र 11/05/2042 11/07/2045	शनि - सूर्य 11/07/2045 23/06/2046	शनि - चंद्र 23/06/2046 22/01/2048	शनि - मंगल 22/01/2048 02/03/2049	शनि - राहु 02/03/2049 07/01/2052
शुक्र 20/11/2042 सूर्य 17/01/2043 चंद्र 23/04/2043 मंगल 30/06/2043 राहु 20/12/2043 गुरु 22/05/2044 शनि 22/11/2044 बुध 04/05/2045 केतु 11/07/2045	सूर्य 28/07/2045 चंद्र 26/08/2045 मंगल 15/09/2045 राहु 06/11/2045 गुरु 23/12/2045 शनि 16/02/2046 बुध 06/04/2046 केतु 26/04/2046 शुक्र 23/06/2046	चंद्र 10/08/2046 मंगल 13/09/2046 राहु 09/12/2046 गुरु 24/02/2047 शनि 26/05/2047 बुध 16/08/2047 केतु 19/09/2047 शुक्र 24/12/2047 सूर्य 22/01/2048	मंगल 15/02/2048 राहु 16/04/2048 गुरु 09/06/2048 शनि 12/08/2048 बुध 08/10/2048 केतु 01/11/2048 शुक्र 07/01/2049 सूर्य 27/01/2049 चंद्र 02/03/2049	राहु 05/08/2049 गुरु 22/12/2049 शनि 05/06/2050 बुध 30/10/2050 केतु 30/12/2050 शुक्र 21/06/2051 सूर्य 13/08/2051 चंद्र 07/11/2051 मंगल 07/01/2052

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - गुरु 07/01/2052 20/07/2054	बुध - बुध 20/07/2054 16/12/2056	बुध - केतु 16/12/2056 13/12/2057	बुध - शुक्र 13/12/2057 13/10/2060	बुध - सूर्य 13/10/2060 19/08/2061
गुरु 09/05/2052 शनि 03/10/2052 बुध 11/02/2053 केतु 06/04/2053 शुक्र 07/09/2053 सूर्य 23/10/2053 चंद्र 09/01/2054 मंगल 03/03/2054 राहु 20/07/2054	बुध 22/11/2054 केतु 12/01/2055 शुक्र 08/06/2055 सूर्य 22/07/2055 चंद्र 03/10/2055 मंगल 23/11/2055 राहु 03/04/2056 गुरु 30/07/2056 शनि 16/12/2056	केतु 06/01/2057 शुक्र 07/03/2057 सूर्य 26/03/2057 चंद्र 25/04/2057 मंगल 16/05/2057 राहु 09/07/2057 गुरु 26/08/2057 शनि 23/10/2057 बुध 13/12/2057	शुक्र 04/06/2058 सूर्य 25/07/2058 चंद्र 20/10/2058 मंगल 19/12/2058 राहु 23/05/2059 गुरु 08/10/2059 शनि 20/03/2060 बुध 14/08/2060 केतु 13/10/2060	सूर्य 29/10/2060 चंद्र 23/11/2060 मंगल 12/12/2060 राहु 27/01/2061 गुरु 09/03/2061 शनि 28/04/2061 बुध 11/06/2061 केतु 29/06/2061 शुक्र 19/08/2061
बुध - चंद्र 19/08/2061 19/01/2063	बुध - मंगल 19/01/2063 16/01/2064	बुध - राहु 16/01/2064 05/08/2066	बुध - गुरु 05/08/2066 09/11/2068	बुध - शनि 09/11/2068 21/07/2071
चंद्र 02/10/2061 मंगल 01/11/2061 राहु 17/01/2062 गुरु 27/03/2062 शनि 17/06/2062 बुध 30/08/2062 केतु 29/09/2062 शुक्र 24/12/2062 सूर्य 19/01/2063	मंगल 09/02/2063 राहु 04/04/2063 गुरु 23/05/2063 शनि 19/07/2063 बुध 08/09/2063 केतु 29/09/2063 शुक्र 29/11/2063 सूर्य 17/12/2063 चंद्र 16/01/2064	राहु 04/06/2064 गुरु 06/10/2064 शनि 02/03/2065 बुध 12/07/2065 केतु 05/09/2065 शुक्र 07/02/2066 सूर्य 26/03/2066 चंद्र 11/06/2066 मंगल 05/08/2066	गुरु 23/11/2066 शनि 03/04/2067 बुध 29/07/2067 केतु 16/09/2067 शुक्र 01/02/2068 सूर्य 13/03/2068 चंद्र 21/05/2068 मंगल 08/07/2068 राहु 09/11/2068	शनि 14/04/2069 बुध 31/08/2069 केतु 28/10/2069 शुक्र 10/04/2070 सूर्य 29/05/2070 चंद्र 19/08/2070 मंगल 15/10/2070 राहु 11/03/2071 गुरु 21/07/2071
केतु - केतु 21/07/2071 17/12/2071	केतु - शुक्र 17/12/2071 15/02/2073	केतु - सूर्य 15/02/2073 23/06/2073	केतु - चंद्र 23/06/2073 22/01/2074	केतु - मंगल 22/01/2074 20/06/2074
केतु 29/07/2071 शुक्र 23/08/2071 सूर्य 31/08/2071 चंद्र 12/09/2071 मंगल 21/09/2071 राहु 13/10/2071 गुरु 02/11/2071 शनि 26/11/2071 बुध 17/12/2071	शुक्र 26/02/2072 सूर्य 18/03/2072 चंद्र 23/04/2072 मंगल 17/05/2072 राहु 20/07/2072 गुरु 15/09/2072 शनि 22/11/2072 बुध 21/01/2073 केतु 15/02/2073	सूर्य 21/02/2073 चंद्र 04/03/2073 मंगल 11/03/2073 राहु 30/03/2073 गुरु 17/04/2073 शनि 07/05/2073 बुध 25/05/2073 केतु 01/06/2073 शुक्र 23/06/2073	चंद्र 10/07/2073 मंगल 23/07/2073 राहु 24/08/2073 गुरु 21/09/2073 शनि 25/10/2073 बुध 24/11/2073 केतु 07/12/2073 शुक्र 11/01/2074 सूर्य 22/01/2074	मंगल 30/01/2074 राहु 22/02/2074 गुरु 14/03/2074 शनि 06/04/2074 बुध 27/04/2074 केतु 06/05/2074 शुक्र 31/05/2074 सूर्य 07/06/2074 चंद्र 20/06/2074

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	5
भाग्यांक	3
मित्र अंक	3, 5, 9
शत्रु अंक	2, 4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	शुक्र, शनि, मंगल
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, मंगल
मित्र राशि	वृष, मिथुन
मित्र लग्न	वृष, तुला, धनु
अनुकूल देवता	गणेश
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल



FUTUREPOINT
Astro Solutions

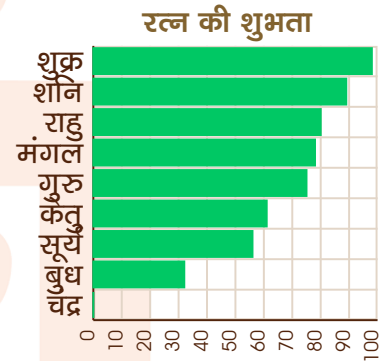


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	98%	भाग्योदय, सुख
नीलम	शनि	89%	स्वास्थ्य, कम खर्च
गोमेद	राहु	80%	भाग्योदय
मूंगा	मंगल	78%	व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
पुखराज	गुरु	75%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन, धन
लहसुनिया	केतु	61%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	56%	भाग्योदय, दम्पति
पन्ना	बुध	32%	दुर्घटना, सन्तति कष्ट
मोती	चंद्र	0%	दुर्घटना, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	20/07/2001	62%	0%	90%	7%	81%	98%	89%	67%	67%
राहु	21/07/2019	38%	0%	65%	32%	75%	100%	95%	92%	47%
गुरु	21/07/2035	62%	0%	84%	7%	88%	86%	89%	80%	61%
शनि	20/07/2054	38%	0%	65%	44%	75%	100%	100%	86%	47%
बुध	21/07/2071	62%	0%	78%	53%	75%	100%	89%	80%	61%
केतु	20/07/2078	38%	0%	84%	32%	75%	100%	76%	67%	73%
शुक्र	20/07/2098	38%	0%	78%	44%	75%	100%	95%	86%	67%
सूर्य	21/07/2104	69%	0%	84%	32%	81%	86%	76%	67%	47%
चंद्र	21/07/2114	62%	0%	78%	44%	75%	98%	89%	67%	47%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

सम
सम
अशुभ
शुभ
शुभ

क्षेत्र

पराक्रम हानि
दाम्पत्य कलह
दुर्घटना से बचाव
भाग्योदय
धनार्जन



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति दशम भाव है। दशम भाव कर्म का मुख्य प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप एक कर्मठ एवं पराकामी महिला होंगी तथा अपने कार्य क्षेत्र में हमेशा उन्नतिशील रहेंगी। साथ ही अपनी बुद्धि एवं योग्यता के बल पर आप (या आपके पति) किसी उच्च प्रशासनिक पद, इंजीनियरिंग, मेडिकल अथवा होटल प्रबन्ध आदि के क्षेत्र में विशिष्ट सफलता अर्जित करेंगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे जिससे समाज में आप एक आदरणीया महिला समझी जाएंगी। आप अपने कार्यों से विशिष्ट सम्मान या उपलब्धि भी अर्जित कर सकती हैं। जिससे आपकी ख्याति भी दूर दूर तक फैलेगी। पिता के सुख एवं स्वास्थ्य के लिए यह स्थिति मध्यम रहेगी। तथापि वे भी समाज में आदरणीय रहेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख प्रदान करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगी।

दशम भाव से मंगल की दृष्टि प्रथम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप यदा कदा पित या गर्मी आदि से कष्ट की अनुभूति कर सकती हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। सामान्यतया आप उत्साह एवं परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। चतुर्थ भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों को अर्जित करेंगी। सुख पूर्वक उनका उपभोग भी करेंगी। जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप अपनी ओर से उन्हें पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। पंचम भाव पर मंगल दृष्टि से संतति से सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा तथा संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब भी हो सकता है। यदा कदा बुद्धि में उग्रता का भाव भी उत्पन्न होगा लेकिन अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को बुद्धिमत्ता पूर्वक सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

इस प्रकार दशमस्थ मंगल के प्रभाव से आप एक पराक्रमी एवं प्रभावी महिला होंगी तथा जीवन में धनऐश्वर्य एवं सुख संसाधनों से युक्त रहेगी। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में पालन करने में आप समर्थ रहेंगी जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आपको सहयोग तथा सम्मान प्रदान करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है ।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य, शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्त्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहु ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली कुम्भ लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई रहेगा। आप दिल के साफ और महत्वकांक्षी व्यक्ति हैं। अपने कार्य में किसी का हस्तक्षेप आप सहन नहीं करते हैं। आप परोपकारी और उदार हैं। समूह के साथ कार्य करना आपको अच्छा लगता है इसलिए आपके मित्र भी अधिक हो सकते हैं। आपको लोगों को साथ लेकर चलना अच्छा लगता है। अपने द्वारा किये हुए कार्यों का श्रेय लेने का प्रयास आप नहीं करते हैं। और हमेशा पीछे रहकर ही कार्य करना पसंद होता है।

आपको खुलकर अपनी बात कहने का प्रयास करना चाहिए और आपको दूसरों की बातें सुनना और अपनी बातों को खुलकर बोलने की आदत डालनी चाहिए। आप विषयों की

गहराई में जाकर सोचते हैं, परन्तु इनकी सोच और लोगों की सोच से भिन्न होती है इसलिए लोग इनकी बातों को आसानी से समझ नहीं पाते। आप बहुत धीरे-धीरे सोच समझकर कार्य करते हैं और संघर्षशील हो सकते हैं। आपका व्यवहार अलग और संयमशील है। कभी-कभी आपका स्वाभिमान अहंकार में परिवर्तित होने लगता है। कभी-कभी दूसरों की खुशी का भी ध्यान रखकर कार्य कर लेना चाहिए।

त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव है। द्वादश भाव अष्टम भाव के बाद दूसरा सबसे अधिक अशुभ भाव समझा जाता है। 6, 8 व 12 भाव के स्वामी जिस भाव में स्थित होते हैं, अथवा जिस भाव के स्वामी के साथ सम्बन्ध बनाते हैं। उन भावों की अशुभता में वृद्धि करते हैं। इन तीन भावों के स्वामी की महादशा-अन्तर्दशा में प्राप्त होने वाले परिणाम शुभफलदायक नहीं होते हैं। 6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते हैं।

आपके कुम्भ लग्न में चन्द्र षष्ठेश, बुध अष्टमेश व पंचमेश तथा शनि द्वादशेश व लग्नेश हैं। आपकी कुंडली में षष्ठ भाव में कर्क राशि है। कुंडली के छठे भाव से बाधा, परेशानी, रोग, शत्रु, मामा, नौकर का विचार किया जाता है। इसके अलावा इस भाव से ऋण और शत्रु भी देखे जाते हैं। छठे भाव के अलावा कुंडली का अष्टम भाव सबसे अधिक अशुभ भावों में आता है। अष्टम भाव से आयु, मृत्यु, लम्बी अवधि के रोगों का विचार किया जाता है।

अष्टम भाव संकट, चिंता और दुर्भाग्य का स्थान है, इस भाव में स्थित होने से चन्द्र बलहीन हो गया है। चन्द्र की इस स्थिति से आपको शिशु अवस्था में गंभीर स्वास्थ्य संकटों का सामना करना पड़ा होगा। मानसिक और दैहिक निर्बलता के कारण असफलता और अन्य कष्ट भोगने पड़ सकते हैं। निर्धनता, मातर कष्ट, घर, जमीन, जायदाद और पैतृक सम्पत्ति से सम्बंधित विवाद हो सकता है। चन्द्र के प्रभाव से संपत्ति सुख, विदेश स्थानों में हानि, अपयश पीड़ित हो सकते हैं।

अष्टम भाव आयु, पुरातत्व और अन्वेषण का भाव है। आपकी यात्राओं में विध्वन बाधाएं दे सकता है। अष्टम भाव से बुध धन भाव को दृष्ट करता है। इससे धन संग्रह में कठिनाइयाँ आती हैं। बुध की यह स्थिति आपके छोटे भाई बहन को पिताधिक्य, तेज बुखार और दुर्बल देह का कारण बन सकती है। बुध की स्थिति अष्टम भाव में आपको बुद्धिबल से धन संग्रह की योग्यता दे रही है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 4, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के

लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।



स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया कुम्भ लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ बलवान एवं चंचलता के भाव से युक्त रहते हैं तथा इनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग इनसे प्रभावित रहते हैं। ये प्रारम्भ से ही प्रगतिशील एवं क्रांतिकारी विचारों के व्यक्ति होते हैं तथा पुराने रीति रिवाजों को कम ही पसंद करते हैं अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम एवं सहानुभूति का भाव रहता है परन्तु धार्मिकता के भाव की न्यूनता रहती है। साथ ही आधुनिकता के भाव से परिपूर्ण रहते हैं। साहित्य एवं कला में रुचि के साथ साथ ये उत्तम वक्ता भी होते हैं।

इनका सांसारिक दृष्टि कोण विशाल होता है तथा किसी भी प्रकार से भेद भाव की भावना इनमें नहीं रहती है अध्ययन के प्रति इनकी रुचि रहती है तथा परिश्रम पूर्वक विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके एक विदुषी के रूप में सामाजिक सम्मान एवं आदर प्राप्त करते हैं। अवसरानुकूल नेतृत्व प्राप्त करने में भी सफल रहते हैं। भावुकता की इनमें न्यूनता रहती है तथा बुद्धिमता से अपने अधिकांश कार्य कलापों को सम्पन्न करते हैं। अतः धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख पूर्वक इनका उपभोग करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान होंगी परन्तु मन में स्थिरता कम ही रहेगी। आप अपनी विद्वता एवं बुद्धिमता से शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करेंगी फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगी। आप सूक्ष्म दृष्टि के महिला होंगी तथा अन्य जनों को प्रभावित करके उनके विषय में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त आप परिश्रम पूर्वक धनार्जन करेंगी तथा अपने पराक्रम से उन्नति मार्ग प्रशस्त करेंगी।

लग्न में शनि की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगी। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगी। आप प्रारंभ से ही पराक्रमी एवं परिश्रमी स्वभाव के रहेंगी तथा अपने इन्हीं गुणों के द्वारा जीवन में सफलताएं अर्जित करेंगी। धनैश्वर्य की आपके पास प्रचुरता रहेगी तथा आय स्रोतों में वृद्धि करके इच्छित धन होगा।

समाज में आप एक सम्मानित तथा प्रतिष्ठित महिला होंगी तथा सभी लोग आपको यथोचित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगी। भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में आप समर्थ होंगी तथा सपरिवार उनका उपभोग करने में प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। आप श्रेष्ठ कार्यों को करने में रुचिशील रहेंगी तथा आपके उत्कृष्ट कार्यों से सभी लोग प्रभावित रहेंगे। आपके प्रवृत्ति भ्रमण प्रिय रहेगी तथा अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगी। साथ ही यदा कदा आप आवश्यकता से अधिक व्यय करेंगी। अतः ऐसी प्रवृत्ति पर नियंत्रण रखने का प्रयास करें।

मित्र एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगी तथा उनसे इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगी। इस प्रकार आप बुद्धिमान विदुषी पराक्रमी एवं परिश्रमी महिला

होंगी तथा सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करने में समर्थ होंगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म के समय में द्वितीय भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप दार्शनिक प्रवृत्ति की महिला होंगी साथ ही स्वप्न दृष्टा प्रवृत्ति भी रहेगी। आप स्पष्ट वक्ता होंगी तथा जो कुछ भी मन में हो अन्य जनों के समक्ष स्पष्ट रूप से कह देंगी। आपका स्वभाव अत्यन्त ही उदार होगा तथा समाज सेवा के प्रति आपकी भावना रहेगी तथा अवसरानुकूल इस कार्य को करती रहेंगी। आप में विनम्रता का भाव भी रहेगा तथा अजनबी व्यक्ति भी पहली ही बार में आपसे प्रभावित हो जाएगा तथा आपके प्रति उसके मन में सम्मान की भावना उत्पन्न हो जाएंगी। अपने विचारों को व्यक्त करते समय आप श्रोताओं की इच्छा के अनुसार इसमें परिवर्तन करने में सक्षम रहेगी तथा उसे नवीन स्वरूप प्रदान करेंगी जिससे लोग आपसे अत्यंत ही प्रभावित रहेंगे परन्तु यदा कदा आत्मविश्वास की अल्पता दृष्टिगोचर होगी।

आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि उत्तम रहेगी तथा परिवार की खुशहाली के लिए हमेशा यत्नशील रहेंगी। साथ ही इनकी प्रसन्नता तथा सन्तुष्टि के लिए यदा कदा आप अपने विचारों को परिवर्तित करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपको सुन्दर तथा सुस्वादु भोजन अच्छा लगेगा परन्तु मिष्ठान एवं नमकीन आपके विशेष प्रिय रहेंगे। आपकी वाणी भी मधुर एवं स्पष्ट रहेगी तथा अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे। प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन करना आपको प्रियकर लगेगा। साथ ही जमीन-जायदाद वाहन तथा बहुमूल्य द्रव्यों को भी अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त अचानक धन प्राप्ति या माता पिता के द्वारा पैतृक सम्पत्ति भी आपको प्राप्त होगी तथा आनन्द पूर्वक आप अपना समय व्यतीत करेंगी।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थभाव में वृषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आवश्यक सांसारिक सुखों से युक्त होंगी तथा आधुनिक सुख-संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी सम्पन्न होंगी एवं जीवन में उनका आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगी। आप एक समृद्धिशाली महिला होंगी तथा समाज में भी स्तर उन्नत होगा।

सामान्यतया जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी इसका स्वामित्व को प्राप्त करके आप श्रेष्ठता के भाव की अनुभूति करेंगी। किसी वृद्ध व्यक्ति की चल एवं अचल सम्पत्ति भी आपके नाम हो सकती है। इससे आपके ऐश्वर्य में अभि वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। अपने पराक्रम एवं परिश्रम से भी आप यथोचित सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगी। आपको चल सम्पत्ति की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से विशेष लाभ होगा परंतु विवाद युक्त सम्पत्ति से दूर ही रहना चाहिए।

आपका आवास सामान्यतया अच्छा होगा तथा आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से सुसज्जित रहेगा। इसकी स्वच्छता एवं आकर्षक बनाए रखने के लिए आप नित्य तत्पर होंगी। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी सज्जन होंगे परंतु संबंधों में औपचारिकता ही रहेगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख की प्राप्ति होगी तथा युवावस्था से ही आप वाहन का उपयोग करना प्रारंभ करेंगी जिससे आपको प्रसन्नता की अनुभूति होगी।

आपकी माताजी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं आधुनिक विचारों की महिला होंगी तथा परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा तथा सभी पारिवारिक जनों का वह पूर्ण ध्यान रखेंगी फलतः सभी सदस्य उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप दोनों एक दूसरे के लिए सहयोगी सिद्ध होंगी तथा सुख-दुःख में एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगी परंतु परस्पर मतभेदों के कारण यदा कदा संबंधों में तनाव की अनुभूति हो सकती है। अतः यदि आप परस्पर सामंजस्य बनाए रखें तो संबंधों में मधुरता आ सकती है। साथ ही माता से आपको अवसरानुकूल नैतिक तथा आर्थिक सहयोग की प्राप्ति भी होती रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको परिश्रम करना पड़ेगा तभी वांछित सफलताएं मिल सकती हैं। स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने में भी आत्मविश्वास एवं परिश्रम के भाव का प्रदर्शन करना पड़ेगा लेकिन यदि आप स्नातक परीक्षा की अपेक्षा किसी तकनीकी पाठ्यक्रम में डिप्लोमा आदि करें तो इससे आपके आसानी से सफलता मिलेगी तथा अपने भविष्य का निर्माण करने में समर्थ होंगी। इसके अतिरिक्त मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपने समस्त सांसारिक एवं अन्य कार्य-कलापों को बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करेंगी। आप में शीघ्र एवं उचित निर्णय लेने की क्षमता भी विद्यमान होगी जिससे आप अवसरानुकूल वांछित लाभ एवं सफलता प्राप्त करेंगी। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान अपनी बुद्धिमता से शीघ्र एवं सुगमता से सम्पन्न करेंगी फलतः अन्य सामाजिक लोग भी आपसे प्रभावित होंगे एवं यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रुचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान, इतिहास एवं पुरातत्व के क्षेत्र में आपकी पूर्ण रुचि होगी तथा इनका परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जन करके एक विदुषी के रूप में समाज में स्वयं को स्थापित करने में समर्थ होंगी तथा आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

पंचमभाव में मिथुन राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी तथा आपका प्रेम भावनात्मक आकर्षण से युक्त होगा। इस क्षेत्र में आप मर्यादा एवं नैतिकता का भी यत्नपूर्वक पालन करेंगी एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाएंगी। अतः आपका प्रेम-प्रसंग विवाह के रूप में भी परिणित हो सकता है जिससे आपका दाम्पत्य जवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

जीवन में आपको यथोचित समय पर पुत्र एवं कन्या दोनों की प्राप्ति होगी परन्तु इसमें किंचित विलम्ब हो सकता है। आपकी संतति बुद्धिमान, पराक्रमी, तेजस्वी एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगी। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में समान्यतया तत्पर होंगी परन्तु उनकी प्रवृत्ति स्वच्छन्द एवं स्वतन्त्र होगी। अतः यदा-कदा वे बिना माता-पिता की सलाह से भी कोई कार्य सम्पन्न कर सकते हैं लेकिन इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्रता कार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे परस्पर सदभाव विश्वास एवं सम्बन्धों में मधुरता भाव बना रहेगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में आपकी पूरी सेवा करेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे। अतः बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली सिद्ध होंगी।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं परिश्रमी होगी तथा प्रारंभ से ही वांछित सफलताएं अर्जित करके अपने उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त करेंगे। आप भी अपनी ओर से उनकी शिक्षा का यथोचित प्रबन्ध करेंगी एवं आधुनिक परिवेश में उन्हें शिक्षा प्रदान करेंगी जिससे वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करने में नित्य योग्य सिद्ध होंगी। इसके अतिरिक्त वे विनम्र सक्रिय, व्यवहार कुशल एवं उत्तम कार्य-कलापों को करने वाले होंगे जिससे अन्य सामाजिक जन भी उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे तथा वांछित स्नेह प्रदान करेंगे। इससे आपके सम्मान में भी वृद्धि होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



परिवार, विवाह एवं साझेदार

यचय55 आपके जन्म समय में सप्तम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है सामान्यतया सिंह राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी तेजस्वी पराक्रमी साहसी एवं स्वाभिमानी होता है साथ ही वह तेजस्वी एवं कर्तव्य परायण होता है।

अतः इसके स्वभाव से आपके पति तेजस्वी स्वभाव के व्यक्ति होंगे। सांसारिक कार्य कलापों को वह परिश्रम एवं पराक्रम से सम्पन्न करेंगे तथा अपने साहसिक कार्यों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे। तथा समाज एवं परिवार के प्रति ईमानदारी से पालन करेंगे।

आपके पति गौर वर्ण के आकर्षक व्यक्ति होंगे एवं उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी मध्यम होगी परन्तु शरीर में पुष्टता रहेगी जिससे उनके व्यक्तित्व में आकर्षण रहेगा। पाश्चात्य समाज एवं संस्कृति के प्रति भी उनका रुझान रहेगा। भौतिकता के प्रति भी उनका आकर्षण होगा एवं सुंदर तथा कलात्मक वस्तुएं प्रिय होंगी तथा उनके संग्रह में तत्पर रहेंगे।

सप्तम भाव में सिंह राशि के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा या आप स्वयं भी प्रेम विवाह कर सकती हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्य सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति मन में आकर्षण एवं प्रेम की भावना भी होगी। आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे अतः सांसारिक महत्व के कार्यों को एक दूसरे के सहयोग से सम्पन्न करेंगे। इससे आपस में विश्वास तथा सदभाव बना रहेगा।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा आर्थिक रूप से वे सुदृढ़ रहेंगे। विवाह के समय दहेज के रूप में मायके से आपको प्रचुर मात्रा में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके संबंध सामान्य रहेंगे तथा एक दूसरे के प्रति विशेष सम्मान या सहयोग का भाव होगा।

सास ससुर के प्रति आपके पति की सेवा की भावना होगी। साले एवं सालियां भी उनके व्यवहार एवं वाणी से सन्तुष्ट रहेंगे तथा उन्हें वांछित सम्मान देंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति अच्छी होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। साथ ही बृहस्पति भी दशमभाव में ही स्थित है। वृश्चिक राशि जलतत्व एवं बृहस्पति वायुतत्व युक्त ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया की प्रधानता के साथ साथ श्रमसाध्य भी होगा तथा इससे उन्नति के मार्ग पर आप अग्रसर रहेंगी। साथ ही आप स्वतंत्र व्यवसाय एवं कार्य की इच्छुक होंगी तथा इसमें आपको इच्छित सफलता की प्राप्ति होगी।

दशमभाव में वृश्चिक राशिस्थ बृहस्पति के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र शिक्षा विभाग, धर्मोपदेशक, प्रोफेसर, न्यायाधीश, वकील, बैरिस्टर, सचिव, सलाहकार, बैंकक्षेत्र, शेयर विभाग, व्यवस्थापक, प्रबंधक, कार्मिक विभाग, लेखाकार तथा राजनीति उत्तम एवं अनुकूल रहेगी। इन क्षेत्रों एवं विभागों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों से आप सुरक्षित रहेंगी। अतः अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए आपको उपरोक्त विभागों का ही चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए सुवर्ण आदि धातु का व्यापार, शेयर ब्रोकर, वित्त कम्पनियों में पूंजी निवेश या स्वामित्व, लेखाकार का स्वतंत्र व्यवसाय तथा सरकारी क्षेत्र के कार्य या ठेको से आपको वांछित धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी साथ ही आप स्वतंत्र रूप से ज्योतिष वकालत या अन्य कार्यों को भी सम्पन्न कर सकती हैं। इसमें आप उन्नति के मार्ग अग्रसर होंगी तथा अनावश्यक परेशानियों से सुरक्षित रहेंगी अतः आपको उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही व्यापार का आरंभ करना चाहिए। इसके अतिरिक्त आप सूद या ब्याज से भी धन एवं लाभ अर्जित कर सकती हैं।

दशमभाव में बृहस्पति के प्रभाव से जीवन में आपको उच्च मान प्रतिष्ठा तथा आदर मिलेगा तथा अपनी योग्यता से आप किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगी। समाज में आप प्रभावशाली एवं आदरणीय महिला मानी जाएंगी तथा लोगो से यथोचित मान सम्मान प्राप्त करेंगी। आप एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त होगी साथ ही आप किसी सामाजिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक संस्था के प्रधान या सम्मानित सदस्या भी हो सकती हैं। इससे आपको मनोवांछित यश एवं प्रतिष्ठा मिलेगी।

आपके पिता शिक्षित विद्वान एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगी तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। साथ ही समाज में सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगी। आपके भविष्य के प्रति वे जागृत रहेंगी तथा योग्य व्यक्ति बनाने के लिए उच्च शिक्षा का प्रबंध करेंगी। साथ ही प्रारंभिक कार्य क्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान होगा। आप भी एक योग्य एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगी तथा स्वपरिश्रम से कार्य क्षेत्र में उल्लेखनीय उन्नति प्राप्त करेंगी जिससे पिता के मान सम्मान में वृद्धि होगी। पिता के आप परम आज्ञाकारी होंगी तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को उनकी सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगी। इससे

अतिरिक्त आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता होगी तथा सैद्धांतिक एवं वैचारिक समानता भी होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि लग्न स्थान में रहेंगे व मीनस्थ राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि द्वितीय भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि पंचम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि छठे सप्तम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि पंचम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। लग्नस्थ शनि के प्रभाव से आप आलसी हो सकती है, जिसके कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं, तो आप अपने साझेदार से संतुष्ट नहीं रहेंगे और आप को इच्छित लाभ प्राप्त नहीं होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए अच्छा रहेगा।

14 मई के बाद आपके आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। शेयर बाजार से अच्छा लाभ होगा। परन्तु राहु शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आपके कार्य क्षेत्र में कुछ विरोधी भी उत्पन्न होंगे। जो आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के राहु आर्थिक मामलों में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे जिसके फलस्वरूप आप बचत नहीं कर पाएंगे। बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों से बचें एवं निवेश के मामले में सावधान रहें।

14 मई के बाद धनागम में निरन्तरता बढ़ जाएगी जिससे कर्जें इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य में धन खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके परिवार में कुछ विशम परिस्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं। परिवार में एक दूसरे के प्रति वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं जिसके फलस्वरूप आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है।

गुरुग्रह के गोचर के बाद समय अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। आपके परिवार में मांगलिक कार्य में आपकी अहम भूमिका होगी। सामाजिक रूप से यह वर्ष सामान्यतः उत्तम रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे, परन्तु 14 मई से गुरुग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उसके बाद समय काफी अनुकूल हो जाएगा।

यह समय गर्भधान के लिए बहुत अच्छा रहेगा। नैसर्गिक रूप से शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो उसका विवाह संस्कार भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीय स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें नहीं तो इसका नकारात्मक प्रभाव भी आपके शरीर पर पड़ेगा। 29 मार्च के बाद शनि ग्रह का गोचर भी द्वितीय स्थान में हो रहा है। उस समय के अंतराल में आप अचानक रोग ग्रस्त हो सकते हैं।

गुरुग्रह के गोचर के बाद आपका समय काफी अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए इस वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः संघर्षात्मक परिस्थितियों में आपको सफलता मिलेगी।

अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है। विद्यार्थियों के लिए 14 मई के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। उस समय आपको सफलता प्राप्त होगी। नौकरी के लिए कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरु की दृष्टि से विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। आप परिवार सहित अपने जन्म स्थल की यात्रा करेंगे। 14 मई के बाद लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन, पूजा, मन्त्र पाठ, यज्ञ एवं अनुष्ठान इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। 14 मई के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति

श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- मंगलवार को हनुमानजी को चोला चढ़ाएं और नित्य प्रति हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- राहु मन्त्र का पाठ करें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को राटी में गुड़ डालकर खिलाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में द्वादश में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि में छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि में सप्तम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। अतः इस समय कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों में और सुधार करने की आवश्यकता है। कार्यस्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

02 जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहे हैं। अपना आत्मविश्वास बनाए रखें। कार्य स्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। आपके उच्चाधिकारी आपको परेशान भी कर सकते हैं, जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। परन्तु द्वितीयस्थ शनि के कारण आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे।

02 जून के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे। जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। पारिवारिक सदस्यों की बीमारी पर भी आपका धन खर्च हो सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। लेकिन परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपको बड़े भाईयों का सहयोग प्राप्त हो सकता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



02 जून के बाद द्वितीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। उस समय आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। मातुल पक्ष के लिए यह समय ज्यादा खराब है। 31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उस समय इष्ट मित्र, छोटे भाईयों व जीवनसाथी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। समाज में आप का मान-सम्मान और बढ़ेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि वह विवाह योग्य है, तो विवाह भी हो जाएगा।

02 जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है, जिसके फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। 31 अक्टूबर के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। लग्न स्थान के राहु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। कभी कभी स्वास्थ्य अनुकूल रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव होगा।

02 जून बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरुजल तत्व राशि में होने के कारण कफ, खांसीया पेट से संबंधित रोग हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेशमिल जाएगा। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेराजगार जातकों को कुछ और दिन इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। धार्मिक यात्राओं के भी योग बन रहे हैं।

02 जूनके बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्रा

करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आप अपने गुरु का सम्मान करेंगे। मन्त्र जाप या तन्त्र साधना के प्रति आपकी विशेष रुचि बनी रहेगी और दान पुण्य अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करे एवं नीली वस्तु का दान करें।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें। अन्न दान या पीली वस्तु का दान करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं द्वितीय भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष द्वादश भाव में रहेंगे। वक्रीगुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। लगातार प्रयास करने के बावजूद भी व्यापार में सफलता की उम्मीद कम ही रहेगी। शनि, राहु व गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। गुप्त शत्रु एवं प्रत्यक्ष शत्रु आपके कार्यों में रुकावटें डाल जा सकते हैं। बड़े अधिकारी या वरिष्ठ लोगों का भी सहयोग नहीं मिलेगा। आत्मविश्वास बनाए रखें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। उच्च अधिकारियों द्वारा आपको प्रताड़ित भी किया जा सकता है।

जून के बाद समय अनुकूल हो रहा है। मित्र या पत्नी के सहयोग से लाभ प्राप्त होगा। किसी के साथ मिल कर कोई कार्य कर सकते हैं, जिसमें आपको लाभ मिल सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा। 26 नवम्बर के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो ज्यादा नुकसान हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिसे वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के शुरुआत से ही धनागम के सारे स्रोत प्रभावित होंगे। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं, जिसमें पहले से संचित किया हुआ धन भी खर्च हो सकता है जिसके फलस्वरूप आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। कोई भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस विषय में सोच विचार करना बहुत जरूरी है नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। बीमारी दूर करने में भी पैसा खर्च हो सकता है। किसी को उधार पैसा न दें वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

जून के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू हो जाएगा। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि आपकी आय के मार्ग खोल सकती है। आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में आपकी पत्नी एवं भाईयों का भी मुख्य सहयोग होगा। 26 नवम्बर के बाद फिर से समय प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय आपको अपने अनावश्यक खर्च पर ज्यादा ध्यान देना होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी हो सकती है। अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखें। आपको मातुल पक्ष का भी सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में फिर से शान्ति का वातावरण होगा, जिसमें आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी। तृतीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से समाज में आपका मान-सम्मान और अधिक बढ़ेगा। भाइयों का भरपूर सहयोग मिलेगा। वर्ष का अंतिम माह अधिक शुभ नहीं रहेगा।

संतान

वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उनकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

जून के बाद आपके बच्चों के लिए समय काफी अच्छा हो रहा है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता मिल सकता है। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा। यदि आपका दुसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। संतान की इच्छा रखने वाले जातकों के लिए गर्भाधान का शुभ समय है, परन्तु वर्ष का अंतिम माह शुभ नहीं रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया नहीं रहेगा। लग्न स्थान का पाप कर्तरी योग में होने के कारण स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो यह समय आपको अधिक प्रभावित कर सकता है ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा नहीं तो परेशानी बढ़ सकती है।

जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है जिसके प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी और आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

जून के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग

लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है। यदि व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें भी आपको सफलता मिलेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादशस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

जून के बाद तृतीय स्थान पर शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी होगी। यात्रा करते समय पूर्ण सावधानी बरतें, क्योंकि मुख्य ग्रह प्रतिकूल स्थान से गोचर कर रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वंदता के कारण पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। चाह कर भी आप धार्मिक कार्य नहीं कर पाएंगे। अधिक आलस्य के कारण भी आपकी नित्य क्रिया प्रभावित हो सकती है। जून से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे जिससे आपके परिवार में सुख, समृद्धि एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन राहु का दान करें और प्रत्येक दिन राहु मन्त्र का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं रहेगा। दूसरे स्थान का शनि आपके कार्य-व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको अपने विवेक से काम लेना होगा। फरवरी के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ कर सकते हैं। कम समय में बेहतर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आप अपना आत्मविश्वास बनाए रखें क्योंकि एकादश स्थान का राहु अचानक लाभ कराता रहेगा। आप मानसिक रूप से संतुष्ट हो कर प्रसन्नता पूर्वक अपना कार्य करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। फरवरी से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने से आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु होगा। पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिल सकता है। 24 मई के बाद एकादश स्थान के राहु अचानक धन लाभ कराने के प्रबल योग बना रहे हैं।

24 जुलाई के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। बच्चे या परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। अतः अच्छा यही होगा की विपरीत स्थिति में आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं। फरवरी के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे।

तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। 28 फरवरी से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे एवं परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

24 जुलाई से समय फिर से प्रभावित हो रहा है। उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति रुक सकती है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद सप्तम स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखें।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आप बहुत जल्दी अच्छे हो जाएंगे। सुबह सुबह व्यायाम अथवा योगा करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। फरवरी से विद्यार्थियों के लिए समय बहुत बढ़िया रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपके विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। 23 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी। व्यावसायिक व्यक्ति की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। फरवरी के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा की भक्ति या मन्त्र पाठ में ज्यादा रूचि लेंगे। सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यवसायिक उन्नति के साथ होगा। समय समय पर उच्चाधिकारियों से लाभ मिलता रहेगा। आप कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपनी सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कम्पनी के साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा।

25 अगस्त से गुरु का गोचर अनुकूल हो रहा है। आप अपने दैनिक कार्य स्फूर्ति से करेंगे और अपने कार्यक्षेत्र कुछ विशेष करेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

पंचम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से भी आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे। एकादश स्थान का राहु अचानक धन लाभ करा सकता है। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे।

29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। इस समय के अंतराल में आप पर कुछ अनावश्यक खर्च आ सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। शनि ग्रह के गोचर के बाद भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों के लिए समय अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से शुभ फलदायक रहेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाई-बहनों के लिए समय बहुत उपयुक्त है तथा उनकी उन्नति के मार्ग भी प्रशस्त होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। बच्चों की उन्नति के भी योग हैं।

05 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक माहौल खराब कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा पारिवारिक वातावरण अनुकूल बना लेंगे। आपकी माता का स्वास्थ्य

भी प्रभावित हो सकता है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बहुत शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। बच्चों के बारे में शुभ समाचार मिलेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। गर्भाधान का शुभ योग बन रहा है। मार्च के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

25 अगस्त के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। वे अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपको उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करनी चाहिए। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक विकसित होगी। 29 मार्च के बाद मौसमजनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करें।

08 अगस्त के बाद शनि का गोचर प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। किसी पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें। सुबह जल्दी उठकर व्यायाम करना लाभप्रद रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप उन्नति करेंगे परन्तु करियर में सफलता पाने के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। गुरु के गोचर के बाद समय विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं रहेगा।

25 अगस्त से गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या सॉफ्टवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहता है उनके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

यात्रा-तबादला

तृतीय एवं नवम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी अधिक यात्राएं होंगी। उन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। 29 मार्च के बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होंगी।

शनि ग्रह के गोचर के बाद नौकरी करने वालों के स्थानान्तरण होगा। यह

परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा। 25 अगस्त से आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आपकी धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। 25 अगस्त के बाद गुरु मन्त्र ले कर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। गरीबों की सहायता करें।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions

